पाठ 50

1. शैतान ने यीशु की परीक्षा क्यों ली?

-क्योंकि शैतान चाहता था कि यीशु पाप करे।

2. शैतान क्यों चाहता था कि यीशु पाप करे?

-क्योंकि शैतान नहीं चाहता था कि यीशु हमें बचाए।

3. क्या यीशु पत्थरों को रोटी में बदलने में सक्षम थे?

-हां।

-यीशु परमेश्वर थे।

-यीशु कुछ भी करने में सक्षम थे।

4. यीशु ने क्या बताया कि शैतान भोजन से अधिक महत्वपूर्ण था?

-यीशु ने शैतान से कहा कि भोजन से अधिक महत्वपूर्ण परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना है।

5. हालाँकि यीशु भूखा था, उसने पत्थरों को रोटी में क्यों नहीं बदला?

-क्योंकि परमेश्वर पिता ने उसे ऐसा करने के लिए नहीं कहा था।

-यीशु शैतान की बात नहीं मानेगा।

-यीशु केवल पिता परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेगा।

6. क्या शैतान जानता है कि परमेश्वर की बाइबल में क्या लिखा है?

-हां।

7. लेकिन शैतान परमेश्वर के वचन के साथ क्या करता है?

- लोगों को फंसाने के लिए शैतान परमेश्वर के वचन को तोड़-मरोड़ कर पेश करता है।

8. शैतान के लिए यीशु को सारे संसार पर नियंत्रण देना क्यों संभव था?

-क्योंकि जब आदम ने शैतान की बात मानी, तो शैतान आदम का, सभी लोगों का, और सारे संसार का स्वामी बन गया।

9. यीशु ने शैतान पर कैसे विजय प्राप्त की?

-परमेश्वर के वचन के साथ।

10. क्या यीशु ने परमेश्वर के वचन को मोड़ दिया?

-नहीं।

-यीशु ने परमेश्वर के वचन को वैसा ही बोला जैसा परमेश्वर की बाइबिल में लिखा है।

11. कौन बड़ा है, यीशु या शैतान?

-यीशु।

12. यीशु शैतान से बड़ा क्यों है?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

-क्योंकि यह यीशु ही थे जिन्होंने शुरुआत में लूसिफ़ेर को एक आदर्श देवदूत के रूप में बनाया था।

13. भविष्य में, यीशु शैतान और उसके सभी राक्षसों के साथ क्या करेगा?

-यीशु शैतान और उसके सभी राक्षसों को अनन्त आग की झील में फेंक देगा।

-एक दिन, दुष्ट राजा हेरोदेस ने जॉन बैपटिस्ट को जेल में डाल दिया।

-यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को जेल में डालने के बाद, यीशु ने क्या किया?

आइए पढ़ें मरकुस 1:14

14-यूहन्ना को बन्दीगृह में डालने के बाद, यीशु परमेश्वर का सुसमाचार सुनाते हुए गलील को गया।

-यीशु ने यहूदियों को कब पढ़ाना शुरू किया?

-यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को जेल में डाल दिया गया।

-जब यीशु ने यहूदियों को पढ़ाना शुरू किया तो वह कितने साल का था?

-वह 30 साल का था।

-यीशु ने यहूदियों को परमेश्वर की खुशखबरी सिखाई।

-परमेश्वर का सुसमाचार क्या था जो यीशु ने सिखाया?

-परमेश्वर की अच्छी खबर यह है कि भले ही हमारे पाप को मौत की सजा दी जानी चाहिए, परमेश्वर हमें बचाने के लिए उद्धारकर्ता भेज रहे थे।

-वह उद्धारकर्ता कौन था जिसे परमेश्वर लोगों को बचाने के लिए भेज रहा था?

-यीशु।

-यीशु ने और क्या सिखाया?

आइए पढ़ें मरकुस 1:15

15-"समय आ गया है," यीशु ने कहा। “परमेश्वर का राज्य निकट है। पश्चाताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो!”

-यीशु का क्या मतलब था जब उसने कहा, "समय आ गया है, और परमेश्वर का राज्य निकट है"?

-यीशु का मतलब था कि उद्धारकर्ता का समय आ गया है, और यह कि परमेश्वर का राज्य जल्द ही शैतान के राज्य को हरा देगा।

-यीशु ने यह भी सिखाया कि लोगों को परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना चाहिए।

-एक व्यक्ति परमेश्वर को खुश करने का एकमात्र तरीका क्या है?

-परमेश्वर के वचन में विश्वास करके।

-जब यीशु ने यहूदियों को शिक्षा देना शुरू किया, तो उन्होंने लोगों को अपने साथ रहने के लिए बुलाया।

आइए पढ़ें मरकुस 1:16-20

16-जब यीशु गलील की झील के किनारे चल रहा था, तो उसने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा, क्योंकि वे मछुआरे थे।

17-"आओ, मेरे पीछे हो लो," यीशु ने कहा, "और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा।"

18-वे फौरन अपने जाल छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

19-जब वह थोड़ा आगे चला, तो जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को नाव पर चढ़ते हुए अपने जाल तैयार करते देखा।

20-तब उस ने बिना देर किए उन्हें बुलाया, और वे अपके पिता जब्दी को भाड़े के लोगोंके संग नाव पर छोड़ कर उसके पीछे हो लिए।

-यीशु ने पुरुषों को अपने साथ रहने के लिए क्यों बुलाया?

-क्योंकि यीशु उन्हें सिखाना चाहते थे ताकि वे दूसरे लोगों को परमेश्वर के बारे में सिखा सकें।

-कुछ लोगों का क्या काम था जिन्हें यीशु ने अपने साथ रहने के लिए बुलाया था?

-उनमें से कुछ मछुआरे थे।

-एक दिन, यीशु यहूदियों को सिखाने के लिए कफरनहूम नामक शहर गए।

आइए पढ़ें मरकुस 1:21

21-वे कफरनहूम को गए, और जब सब्त का दिन आया, तब यीशु आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा।

-जब यीशु कफरनहूम पहुंचे, तो वह उपदेश देने के लिए आराधनालय में गए।

-आराधनालय क्या था?

-आराधनालय वह घर था जहाँ यहूदी बाइबल पढ़ने के लिए मिलते थे।

-अधिकांश यहूदी यीशु की शिक्षा के बारे में क्या सोचते थे?

आइए पढ़ें मरकुस 1:22

22-लोग उसके उपदेश से चकित हुए, क्योंकि उसने उन्हें व्यवस्था के शिक्षकों के रूप में नहीं, बल्कि अधिकार के रूप में सिखाया था।

-ज्यादातर यहूदी यीशु की शिक्षा पर चकित क्यों थे?

-क्योंकि यीशु ने उन्हें बहुत शक्ति और बुद्धि के साथ सिखाया।

-कानून के शिक्षक कौन थे?

-वे फरीसी थे।

-यीशु की शिक्षा फरीसियों की शिक्षा से किस प्रकार भिन्न थी?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर था, यीशु परमेश्वर पिता को जानता था।

-फरीसी पिता परमेश्वर को नहीं जानते थे।

-क्योंकि यीशु परमेश्वर था, यीशु परमेश्वर का वचन जानता था।

-फरीसी परमेश्वर के वचन को नहीं जानते थे।

-क्योंकि यीशु परमेश्वर थे, यीशु ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया।

-फरीसियों ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास नहीं किया।

-जब यीशु उपदेश दे रहे थे, तो एक आदमी जिस पर दुष्टात्मा थी, चिल्लाया।

आइए पढ़ें मरकुस 1:23-24

23-तब एक मनुष्य ने उनकी आराधनालय में, जिस में दुष्टात्मा थी, चिल्लाकर कहा,

24-"हे नासरत के यीशु, तू हम से क्या चाहता है? क्या आप हमें बर्बाद करने आएं हैं? मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो—परमेश्वर के पवित्र जन!"

-शुरुआत में, राक्षस बनने से पहले राक्षस कौन थे?

-शुरुआत में, राक्षस अच्छे स्वर्गदूत थे जिन्हें परमेश्वर ने तब तक बनाया जब तक वे शैतान का अनुसरण नहीं करते और दुष्ट बन गए।

-राक्षस ऐसे लोगों में रहना पसंद करते हैं जो ईश्वर को नहीं मानते।

-इस आदमी में एक दानव रह रहा था जो चिल्ला रहा था।

-क्या दानव जानता था कि यीशु ही शिक्षा दे रहा था?

-हां।

-क्या राक्षसों को पता है कि यीशु परमेश्वर हैं?

-हां।

-क्या दुष्टात्माएँ जानती हैं कि यीशु सिद्ध, पवित्र हैं, और सभी पापों से घृणा करते हैं?

-हां।

-क्या राक्षसों को पता है कि यीशु उनसे ज्यादा शक्तिशाली हैं?

-हां।

-राक्षस यीशु से क्यों डरते हैं?

-क्योंकि राक्षसों को पता है कि यीशु उन्हें किसी भी समय अनन्त आग की झील में फेंकने में सक्षम हैं।

-दानव जानता था कि यीशु के पास उस समय उसे अनन्त आग की झील में फेंकने की शक्ति थी।

-यीशु ने दानव को क्या जवाब दिया?

आइए पढ़ें मरकुस 1:25-26

25-"चुप रहो!" यीशु ने सख्ती से कहा। "उससे बाहर आओ!"

26-दुष्टात्मा ने उस मनुष्य को जोर से हिलाया, और चिल्लाते हुए उसके पास से निकल आया।

-यीशु ने दुष्टात्मा को चुप रहने और उस मनुष्य में से बाहर आने की आज्ञा दी।

-क्या दानव ने यीशु की बात मानी?

-हां।

-दानव ने यीशु की बात क्यों मानी?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

-क्योंकि यीशु राक्षसों से अधिक शक्तिशाली है।

-लोगों ने क्या सोचा जब उन्होंने यीशु को उस आदमी को दानव से बचाते देखा?

आइए पढ़ें मरकुस 1:27-28

27-वे सब इतने चकित हुए कि उन्होंने एक दूसरे से पूछा, "यह क्या है? एक नया शिक्षण-और अधिकार के साथ! यहाँ तक कि वह दुष्टात्माओं को भी आदेश देता है और वे उसकी आज्ञा मानते हैं।"

28-उसके विषय में समाचार शीघ्र ही गलील के सारे क्षेत्र में फैल गया।

-लोग हैरान थे कि यीशु ने उस आदमी को दानव से बचाया।

-लोग चकित थे कि राक्षसों ने यीशु की बात मानी।

-उस शाम के बाद क्या हुआ?

आइए पढ़ें मरकुस 1:32-34

32-उस शाम सूर्यास्त के बाद लोग सभी बीमार और दुष्टात्माओं को यीशु के पास ले आए।

33-सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हो गया,

34-और यीशु ने बहुतों को चंगा किया जिन्हें नाना प्रकार के रोग थे। उसने कई दुष्टात्माओं को भी बाहर निकाला, लेकिन उसने दुष्टात्माओं को बोलने नहीं दिया क्योंकि वे जानते थे कि वह कौन है।

-उस शाम, लोग सभी बीमार और दुष्टात्माओं को यीशु के पास ले आए, और यीशु ने उन सभी को चंगा किया।

-ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु परमेश्वर हैं।

-ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु कुछ भी कर सकते हैं।

-यीशु ने सभी बीमार लोगों को क्यों चंगा किया?

-क्योंकि यीशु उन्हें प्यार करता था।

-क्योंकि यीशु दुखी थे कि वे बीमार थे।

-शुरुआत में जब यीशु ने दुनिया बनाई तो कोई बीमारी नहीं थी।

-परन्तु आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया, और उनके पाप ने सब लोगों को रोग पहुँचाया।

-यीशु उस बीमारी को ठीक करना चाहता था जो पाप ने संसार में लाया था।

-यीशु ने उन सभी लोगों को चंगा क्यों किया जिनमें दुष्टात्माएँ थीं?

-क्योंकि यीशु उन्हें प्यार करता था।

-क्योंकि यीशु दुखी था कि दुष्टात्माएँ लोगों को अपना दास बना रही थीं।

-शुरुआत में जब यीशु ने दुनिया बनाई, तो लोग परमेश्वर की संतान थे।

-लेकिन आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया, और सभी लोग शैतान और उसके दुष्टात्माओं के दास बन गए।

-यीशु लोगों को शैतान और उसके राक्षसों की गुलामी से मुक्त करना चाहता था।

-एक दिन कोढ़ से पीड़ित एक व्यक्ति यीशु को देखने आया।

आइए पढ़ें मरकुस 1:40

40-एक कोढ़ से ग्रस्त व्यक्ति उसके पास आया और उससे घुटनों के बल विनती की, "यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।"

-कुष्ठ रोग क्या है?

-कुष्ठ एक बहुत ही बुरी बीमारी है जो आपका मांस खा जाती है।

-यिशु के समय में कोढ़ का कोई इलाज नहीं था।

-अगर आपको कुष्ठ रोग होता, तो आपके लिए कोई दवा नहीं होती।

-यदि आपको कुष्ठ रोग था, तो आपके लिए कोई इलाज नहीं था।

-अगर आपको कुष्ठ रोग था, तो आपके लिए कोई मदद नहीं थी।

-क्या आदमी कुष्ठ रोग से खुद को ठीक करने में सक्षम था?

-नहीं।

-कोई इलाज नहीं था।

-क्या कोई दूसरा आदमी उसे कुष्ठ रोग से ठीक करने में सक्षम था?

-नहीं।

-कोई इलाज नहीं था।

-क्या कोई डॉक्टर उसे कुष्ठ रोग से ठीक कर पाया?

-नहीं।

-कोई इलाज नहीं था।

-आदमी यीशु के पास क्यों आया?

-क्योंकि वह जानता था कि केवल यीशु ही उसे चंगा कर सकता है।

-क्या यीशु ने उसे चंगा किया?

आइए पढ़ें मरकुस 1:41-42

41- करुणा से भरकर यीशु ने हाथ बढ़ाकर उस मनुष्य को छुआ। "मैं तैयार हूँ," उन्होंने कहा। "साफ रहें!"

42-तुरंत उसे कोढ़ चला गया और वह ठीक हो गया।

-यीशु ने उस मनुष्य को छूकर कहा, “शुद्ध रहो,” और वह मनुष्य चंगा हो गया।

-केवल यीशु जो परमेश्वर हैं, मनुष्य को चंगा करने में सक्षम थे।

-पाप कुष्ठ रोग के समान कैसे है?

-जिस तरह आदमी खुद को कोढ़ से ठीक नहीं कर पा रहा था, उसी तरह हम खुद को पाप से भी ठीक नहीं कर पा रहे हैं।

-जैसे कोई दूसरा आदमी उस आदमी को कोढ़ से चंगा करने में सक्षम नहीं था, उसी तरह कोई दूसरा आदमी हमें पाप से चंगा करने में सक्षम नहीं है।

-जिस प्रकार केवल यीशु ही मनुष्य को कोढ़ से चंगा करने में सक्षम थे, उसी प्रकार केवल यीशु ही हमें पाप से चंगा करने में सक्षम हैं।

-यीशु हमें पाप से चंगा करने के लिए दुनिया में आए।

-यीशु हमें मौत से चंगा करने के लिए दुनिया में आए।

-यीशु हमें शैतान से चंगा करने के लिए दुनिया में आए।

-कोई दूसरा आदमी हमें ठीक नहीं कर सकता; केवल यीशु ही हमें चंगा कर सकते हैं।